शराफ़ रशीदोव

तूफ़ान झुका सकता नहीं

खूबानी पर फूल आये

मुरातअली की नीन्द सदा की तरह तडके खुली। वह अहाते में ऊँचे चबूतरे पर सोया करता था और हर सुबह सबसे पहले जिस चीज़ पर उसकी नजर पडती थी, वह थी खूबानी की लम्बी-लम्बी घनी शाखाएँ। उसकी पत्तियो के बीच से गहरा नीला आकाश और धुंधलाते अन्तिम तारे झाक रहे होते।

मुरातअली थोडी देर तक पुष्पित खूबानी का आनन्द उठाता लेटा रहता। फूल कोपलो से सद्य प्रस्फुटित पत्तियो की झिलमिलाती हरियाली को आच्छादित कर रहे श्वेत-पाटल बादल मे घुल-मिल जाते। यह वृक्ष कतारताल के सबसे गरीब किसान, मुरातअली के पिता ने लगाया था। उसने केवल जीवन के अन्तिम दिनो मे ही, जब वह सामूहिक फार्म मे शामिल हुआ, जाना था कि सुख क्या होता है।

खूबानी की उस पर झुक रही शाखाओ को निहारते हुए मुरातअली को अपने पिता के मृत्यु-पूर्व कहे शब्द स्मरण हो आते "मेरी खूबानी सौ बरस फूलेगी और सौ बरस भरपूर फल देगी। और, मेरे बेटे, तुम भी सौ बरस जियो, और लोगो को तुम्हारी मेहनत का खूब फल मिले "

मुरातअली का दिन रोज़ाना एक ही ढग से शुरू होता था भोर की हलकी धुध, खूबानी की डालिया वह इसका आदी हो चुका था, और यदि जागने पर अपने ऊपर वे डालियाँ नही दिखती, तो उसे जीवन निरानन्द और सूना प्रतीत होता।

आज उसे दिन-भर काफी काम करने थे। मुरातअली ने जल्दी से

कपडे पहने, सुराही के नीचे लगी चिलमची में हाथ-मुँह धोये और पानी लाने चल पड़ा।

मुरातअली का घर एक पहाड़ी की ढलान पर बना था, जिसकी तलहटी में बसा गाँव कटोरे-सा नजर आता था। दूर, ढलानों के बीच से एक नदी बहती थी। उसका उद्गम पहाड़ों में ऊँचाई पर था, बहती-बहती वह पहाड़ी सोतों का शीतल जल जमा करके अनेक छोटे-छोटे चश्मों के मिलने से बनी निर्मल फीरोज़ी पानी की झील से घूट भरती। झील के किनारों पर बेंतों की कतारें लगी हुई थीं; यही कारण था कि झील, नदी और गाँव का नाम भी कतारताल (बेंतों की कतार) पड़ गया।

नदी छिछली थी और गरमियों में लगभग पूरी ही सूख जाती थी शाम को गपशप करने, पहाड़ों से आती ताजा व स्वच्छ हवा का सेवन करने के लिए जमा हुए बूढ़े लोग बड़े अफसोस के साथ कहते : "हमारे यहाँ अगर हवा की तरह पानी भी भरपूर होता, तो हम अपने कतारताल को लहलहाता बाग बना देते!" उन्हें अलतीनसायवासियों से डाह होती, जिन्होंने अपने यहाँ बाग, फुलवारियाँ और सागवाड़ियाँ लगा रखी थीं वे चाहते थे कि उनका गाँव भी हरियाली में डूबा रहे। इसके लिए पानी चाहिए था, पर कहाँ वह पानी! केवल कुछ ही आगनों में इक्के-दुक्के फलदार वृक्ष दिखाई देते थे वे प्राकृतिक दृश्य में चार चाँद लगाने के साथ-साथ उसकी भीषण एकरसता को भी भंग करते थे। मुरातअली की खूबानी सबसे बड़ी और सुन्दर थी, पर उसे सींचने और उसकी संभाल करने में वृद्ध को कितनी मेहनत करनी पड़ती थी, कितना समय लगाना पड़ता था! यदि मुरातअली रोज सुबह-शाम नदी पर उतरकर उसमें से सुराहियों में ठण्डा पानी ला-लाकर पेड़ को न सींचता, तो वह कभी का सूख गया होता। वृद्ध को सबसे ज्यादा मुश्किल गरमियों के झुलसाते दिनों में हुआ करती थी, जब सूरज अतोषणीय लालची की तरह झील और नदी का सारा जल डकोस जाता था। ऐसे दिनों मुरातअली बड़े भोर में पानी लाने पहाड़ों में चला जाता था। वह एक भी बूँद न छलकने देने की कोशिश करता, एक चश्मे से दूसरे पर जाता, बड़ी सावधानी बरतता बहुमूल्य जल को छान-छानकर सुराहियों में भरता। वृद्ध कभी-कभी स्वयं प्यास

के मारे तड़पता, लेकिन एक भी दिन ऐसा नहीं आता, जब वह अपने पिता के लगाये वृक्ष को न सींचता।

उस सुबह मुरातअली एक हाथ में मिट्टी की सुराही और दूसरे में तांबे की सुराही लिये सर्पिल पथरीली पगडण्डी से सावधानीपूर्वक नदी पर उतरा और उनमें पानी भर लिया। वापस ऊपर चढ़ना काफी मुश्किल था। अभी-अभी भोर होने के कारण वृद्ध को खड़ी पगडण्डी के धूसर और ओसमिक्त पत्थर साफ नजर नहीं आ रहे थे। वह एक-एक डग भरता ऊपर चढ़ रहा था हर कदम पर सुराहियां लेकर चलना दूभर होता जा रहा था। वृद्ध का सफेद कुरता पसीने से तर हो चुका था। ठीक घर के सामने पहुँचते ही उसका पैर फिसल गया और वह गिर पड़ा। मिट्टी की सुराही टुकड़े-टुकड़े हो गयी और तांबे की हाथ से छूटकर उसे खिजानी-सी पगडण्डी के पत्थरों से टकराती नीचे लुढ़कने लगी। उठते हुए मुरातअली तीव्र पीड़ा के मारे कराह उठा उसकी कोहनियों और घुटनों की खाल छिल गयी थी। उसने आस्तीन से चेहरा पोंछा, अपने गीले हाथों को पाजामे में रगड़कर साफ किया, कुछ बड़बड़ाया और भारी-भारी सांस लेता सुराही ढूंढने धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा। खुशकिस्मती से सुराही लुढ़ककर नदी तक नहीं पहुँची, किनारे के ढकड़ों में रुक गयी। मुरातअली ने उसमें दोबारा पानी भरा और फिर ऊपर चढ़ने लगा, पर इस बार बलखानी पगडण्डी से नहीं, बल्कि सीधे खड़ी ढलान से। उसका सारा बदन दुख रहा था, सुराही के कारण हाथ खिंचा जा रहा था, किन्तु सन्ताप वृद्ध को शक्ति प्रदान कर रहा था और मुरातअली खाली हाथ से विरल झाड़ियां और निकले हुए पत्थरों को पकड़-पकड़कर हठपूर्वक बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ता जा रहा था। आखिर घर पहुँच ही गया। मुरातअली ने ठोकर से फाटक ठेल अहाते में प्रवेश किया। उसने केतली में थोड़ा चाय का पानी रखा और बाकी बचा चिर-अभीप्सित वृक्ष में दे आया।

उसकी खीज अभी दूर नहीं हुई थी। उसने बेटी के कमरे का दरवाजा खोला। सेमरी मीठी नींद सोयी हुई थी। आम तौर पर वृद्ध अपने बच्चों को आवश्यकता से अधिक समय तक पलंग तोड़ने देख क्रुद्ध हो उठते हैं, तिस पर उस सुबह मुरातअली को किसी-न-किसी

और ओस्मा* के पौधो से लहलहा उठनेवाली थी। मुरातअली की नज़र सूबानी के वृक्ष पर टिक गयी

गृहस्वामी का गर्व – विशाल वृक्ष पहरेदार की तरह अपनी शाखाएँ फुलवारी, बडे-से बदरग हुए कालीन से ढके चबूतरे, कच्चे, जीर्ण-शीर्ण नीचे घर पर फैलाये हुआ था। बाहर के आदमी को घर और आगन मामूली लग सकते थे, लेकिन मुरातअली के लिए वे दुनिया मे सबसे प्यारी चीज़े थे, वह कही भी क्यो न होता अपने घर, सन्दाल**, जिसके पास बैठकर अपनी बूढी हड्डियो को गरमा सकता था, अपनी सूबानी को सर्वाधिक प्रिय और अभिलषित वस्तुओ की तरह याद किया करता था। और ऐसी यादो से दिल को बडा सुकून मिलता है।

सफाई का काम निबटाकर पिता और पुत्री ने चबूतरे पर नाश्ता किया। कपास के खेत कसारताल से कई किलोमीटर की दूरी पर थे। वहाँ का रास्ता सीधा और सुविधाजनक था, लेकिन अपने खेत पर समय पर पहुँचने के लिए मुरातअली को घर से जरा जल्दी निकलना पडता था। वैसे वह लम्बे फासलो का आदी हो चुका था गेहूँ के खेत, जिनमे वह नयी जमीन को कृषि योग्य बनाये जाने तक काम करता रहा था, पहाड के काफी पीछे थे और उन तक पहुँचना वर्त्तमान खेत पहुँचने की अपेक्षा कही अधिक कठिन था।

दिन चढ रहा था। पर्वतो के ऊपर आकाश रक्ताभ हो उठा। खड्डो और घाटियो मे गुलाबी, उदय होते सूर्य की किरणो से किंचित् आलोकित कोहरा छाया हुआ था, किन्तु दूरस्थ गिरि-शिखर दृष्टिगोचर होने लगे थे, और उन पर हिम बुखारा की टोपियो के कारचोबी बेल-बूटो की तरह जाज्वल्यमान हो रहा था।

बरतन उठाने के लिए चबूतरे पर चढा मुरातअली सामूहिक फार्म की फैली हुई जमीन की ओर देखता, सम्मोहित-सा खडा रहा। मिट्टी

---

* ओस्मा – सो० मध्य एशिया का पौधा जिसके रस से स्त्रियाँ अपनी भौंहे रगती हैं। – स०

** सन्दाल – एक प्रकार की अगीठी जिसमे गर्म राख रख दी जाती है और ऊपर से बडा कम्बल ढक दिया जाता है। सर्दियो मे लोग इसके चारो ओर कम्बल के अन्दर अपने पैर रखकर बैठे रहते है और इस प्रकार उन्हे गर्म रखते है।

से चबूतरे पर से चरागाह से अलतीनसाय जानेवाली सड़क स
दिखाई देती थी। वह अगले दिन, योजनाओं और होनी के बारों बारे में सोचता न जाने कितनी बार इस सड़क से गुजरता रहा था

पहाड़ों के बीच की सड़क भी यहाँ से साफ़-साफ़ नजर आ रही थी। यह रहा डोगिबुलाक नाम का गाँव। उधर आखिर मुड़े में निकल सड़क राजमार्ग की धूसर पट्टी लांघकर अलतीनसाय के बगान स्तेपों की ओर चली जाती है। गाँव यहाँ से दिखाई नहीं देता: वह पास की ढलान के कुछ दायीं ओर है। उसकी आँखों के आगे केवल पहले पास से लहलहाती और रंगबिरंगे फूलों से ढकी स्तेपी फैली हुई है ज्यों-ज्यों आगे जाइये त्यों-त्यों जमीन सूखी होती जाती है; वह क्षितिज कूम की गरम सांसों से भुलसी हुई है, उसमें आर-पार लू चलती रहती है। वहाँ की जमीन सख्त व ढेलेदार है और केवल नागदौना के धूसरी नीरस गुच्छेदार पौधों से ढकी हुई है। वह अछूती धरती है। और उसके आगे रेगिस्तान के लाल टीले हैं, जो दूर, बहुत दूर धूसर क्षितिज तक फैला हुआ है और इसलिए निस्सीम प्रतीत होता है

अछूती धरती सदियों से स्वामी की प्रतीक्षा कर रही धरती। मुरातअली को बरबस पार्टी की जिला समिति के सचिव जुरावायेव के वे शब्द स्मरण हो आये, जो उन्होंने पिछले वर्ष सामूहिक फार्म की मीटिंग में दिये भाषण में कहे थे· "आपने हाल ही में कृषि योग्य बनाये अलतीनसाय भूखण्ड से जोरदार फसल काटी है। अब सारी अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने की कोशिश कीजिये – वह आपको दिल खोलकर इनाम देगी। अछूती धरती में खजाना गडा है, जो हम सबको हमेशा-हमेशा के लिए समृद्ध बना देगा!"

कपास के खेत भी, अछूती स्तेपी भी – मुरातअली सब को अपनी सम्पत्ति मानता है। उसने एक बार फिर उन पर मालिक के अन्दाज में नजर डाली और सोचने लगा कि उन्हें उस अमूल्य खजाने को खोद निकालने के लिए कितनी मेहनत करनी पड़ेगी, अचानक उसे ध्यान आया कि उसे काम को देर हो रही है। मेखरी पिता की प्रतीक्षा करती फाटक के बाहर खडी थी। मुरातअली बरतन उठाकर घर में रख आया और कंधे पर कुदाल रख बेटी के पास जाने के लिए कुछ डग ही भर पाया था कि फाटक खोलकर आंगन में उसका पुराना दोस्त

गफूर आ गया। मुरातअली अचम्भे मे पडा अनपेक्षित अतिथि को ताकता रह गया। उसने गफूर को अरसे से नही देखा था और उसे बडी मुश्किल से पहचान पाया.

मेहमान के कपडो का नजारा देखने लायक था। उसके पैरो मे रस्सी को कई बार लपेटकर बाधे रबड के पुराने जूते थे। रग उडकर सफेद हुई, कीचड मे सनी फौजी पतलून के पायचे पुराने ऊनी मोजो मे उडसे हुए थे। मिरजई पतलून से कुछ कम पुरानी और थोडी मजबूत थी। बहुरूपिया की इस पोशाक पर तुर्रा यह था कि टोपी बिलकुल नयी और अभी-अभी खरीदी हुई थी।

गफूर ने गृहस्वामी को उसे जी भरकर देख-निहार लेने का मौका दिया और फिर पीले-पीले दात निपोडता मुस्कराकर मुरातअली की ओर बढा। मित्रो ने पहले एक दूसरे का आलिगन किया और फिर हाथ मिलाकर हाल-चाल पूछना शुरू किया।

"अहा, लौट आये, कितना अच्छा हुआ!" मुरातअली खुशी से कह उठा। "काफी अरसा हो गया रिहा हुए?"

"यहा कल ही पहुँचा।" गफूर ने नाक-भौह सिकोडी। "सोचा था कि कम-से-कम घर पहुँचकर आराम से रहूँगा। सोचा था कि भानजी मुझ पर रहम करेगी, मदद का हाथ बढायेगी। लेकिन ऐसा कभी हो सकता था! अपनो के पास आया, पर मेरे साथ मिले गैरो की तरह "

"सुनो, सुनो, प्यारे! जो हुआ सो हुआ। आयकीज क्या पुरानी बाते अभी तक नही भूल पायी?"

"अरे, छोडो भी! उसने खुद ही मेरी चुगली खाई, और अब पहचानने तक को तैयार नही होती। पत्थर का दिल है उसका, पत्थर का!"

मुरातअली अविश्वास के अन्दाज मे सिर हिलाता सुनता रहा, और गफूर ने इसे सहानुभूति की अभिव्यक्ति समझ आयकीज के साथ हुई अपनी मुलाकात के बारे मे उत्तेजित स्वर मे नमक-मिर्च लगाकर सुना डाला।

वैसे उनकी मुलाकात हुई ऐसे थी। आयकीज के पास गफूर जब अचानक आ धमका, वह ग्राम सोवियत मे अपने काम मे व्यस्त थी।

वह नशे में था और बड़ी मुश्किल से अपने पैरों पर टिक पा रहा था। आयकीज को गुस्से से लाल हुई आंखों से घूरते हुए गफूर ने फटी आवाज में व्यंग्यपूर्वक कहा

"सलाम, भानजी! तुम अपने बदनसीब मामा से मिलने क्यों नहीं आती थी, क्यों?"

आयकीज ने दुआ-सलाम किये बिना कुरसी की ओर संकेत किया।

"मेहरबानी करके बैठिये और बताइये कि मैं आप की क्या सेवा कर सकती हूं?"

गफूर लड़खड़ाया और मेज पर हाथ टेक आयकीज के नजदीक आकर उसके मुंह पर शराब का भभका छोड़ता हुआ घृणापूर्वक फुसफुसाया

"क्या सेवा कर सकती हो, भानजी? तुमने मुझे दोस्तों से, घर से जुदा कर दिया, बदनसीब बना दिया, बेइज्जत किया, और अब पूछती हो कि क्या सेवा कर सकती हूं? आज मेरा सगा बेटा तक मुझे पहचानने को तैयार नहीं है! मेरी बेइज्जती मेरे दिल में कांटे-सी खटक रही है!"

आयकीज की आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा, होंठ कांपने लगे वह अपने पर नियंत्रण रखने की कोशिश करती मेल-मिलाप के स्वर में बोली ·

"बैठिये, शान्त हो जाइये। अपने दिल का बुखार निकालने के लिए यहां नशे में आना जरूरी नहीं था।"

गफूर करीब-करीब बैठ ही चुका था, पर आयकीज के अन्तिम शब्द सुनते ही ऐसे उछल पड़ा मानो कुरसी पर अंगारे पड़े हों।

"चलो-चलो, दिखाओ अपनी ताकत, भानजी! कह दो सबसे तुम्हारा मामा मुजरिम है, वह खुशी में जरूरत से ज्यादा पी गया है!"

आयकीज आग-बबूला हो रहे गफूर की ओर ध्यान दिये बिना नोटबुक में कुछ लिखती रही, और गफूर पूर्णतया आत्मसंयम खो मेज पर मुक्का मारा और चीख उठा

"ऐ भानजी, सुनो मैं क्या कहता हूं! मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था? मैंने कभी तुम्हारे साथ बुरा बरताव किया? नहीं, भानजी, फर्ज तो तुमने अदा नहीं किया! तुमने अपने सगे मामा पर तोहमत लगायी थी! लेकिन याद रखना मैं चुप बैठनेवालों में से नहीं हूं!"

आयकीज़ अन्यमनस्कता से मुस्करा पड़ी। उसने तो सोचा था कि गफूर के साथ जो कुछ हुआ उसके बाद वह होश में आ जायेगा। क्योंकि उसने न्यायालय में सामूहिक फ़ार्म का अनाज चुराने का आरोप स्वयं स्वीकार किया था। स्वीकार तो कर लिया था, पर स्पष्ट है उस पर पछतावा नहीं था, सदा उसके हृदय में प्रतिशोध की द्वेषपूर्ण भावना सुलगती रही थी, जो अब मूसलधार वर्षा के बाद उफनती गंदे पानी की धारा की तरह किनारे तोड़ बह निकली थी।

"आखिर आपको मुझसे क्या चाहिए?" नोटबुक से सिर उठाकर आयकीज़ ने पहले की तरह आत्मसंयम से पूछा।

भानजी की शान्तचित्तता ने गफूर को परास्त कर दिया। वह कुछ शान्त हो गया और आयकीज़ से कोई मामूली काम ढूंढने का अनुरोध करने लगा, जो चक्की पर ही सही, पर लोगों की नज़रों से दूर हो। आयकीज़ उसे केवल यही आश्वासन दे सकी उसे सामूहिक फ़ार्म में शामिल किये जाने के बाद सबके साथ खेत में समान रूप से काम करने का अधिकार मिल जायेगा। गफूर अपनी बात पर अड़ा रहा, और आयकीज़ भी डटी रही

"दो में से एक चुन लीजिये या कुदाल, या फिर जहाँ मर्ज़ी हो, वहाँ चले जाइये। आपको यहाँ कोई नहीं रोक रहा है।"

गफूर शनै-शनै फिर भानजी पर आक्षेपों की बौछार करता हुआ चीखने लगा। तब आयकीज़ ने कह दिया कि वह अपने मामा से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती, और गफूर ने एलान कर दिया कि उसकी कोई भानजी नहीं है। इसी बात पर दोनों जुदा हो गये। गफूर सामूहिक फ़ार्म के अध्यक्ष कादीरोव को ढूंढने निकल पड़ा, पर वह पशुपालन-फ़ार्म पर गया हुआ था। गफूर मन-ही-मन अटकलें लगा रहा था कि उससे कौन सहानुभूति दिखा सकता है। उसे मुरादअली की याद हो आयी और वह सुबह कुछ जल्दी उठकर कनारख़ाना के लिए रवाना हो गया।

इस समय आयकीज़ से अपनी मुलाकात का किस्सा अपने पुराने दोस्त को सुनाते समय गफूर ने आंसुओं की झड़ी बांध दी, अपनी कल्पना से खूब नमक-मिर्च लगा दिया, गालियां जोड़ दीं और मुराद-अली ने शिष्ट गृहस्वामी के नाते चटपटे बनाये पकवान का रसास्वादन

[illegible] उसने विरोध प्रकट नहीं किया और मेहरी ने [illegible]
[illegible]
[illegible] व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा

[illegible] हमारी गोरी सारे सामूहिक फार्म में मशहूर है, यहाँ तक कि [illegible] से जिला कमेटी ने हमारी तारीफ की थी।

गफूर ने लम्बी साँस लेकर [illegible] से कहा

"शुक्रिया दोस्त। जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूँगा। [illegible] तुम्हारी बेटी का [illegible]

मेहरी फाटक का सहारा लिये यही सब का तमाशा [illegible] बीच-बीच में अधीरता से कभी पिता की ओर देख रही थी, कभी गफूर की ओर। तब बाप उसके बाजू पकड़ते ही मुरातअली ने जल्दी से और गफूर की कोहनी पर हाथ रख क्षमा-याचना के स्वर में कहा

"मुझे माफ करना, दोस्त, मुझे बिलकुल फुरसत नहीं है, काम को देर हो रही है। चाहो तो हमारे साथ चलो।"

मित्र बातचीत करते हुए फाटक से बाहर आये और मेहरी के पीछे-पीछे लम्बे-लम्बे डग भरते चलने लगे। धूप तेज हो चली थी; ओस को विदा कर चुकी हरी घास से मादक सुगन्ध आ रही थी। और पथिकों को अपनी याद दिलाने के लिए दूरस्थ स्तेपी सामने से जलती हुई लू के झोंके भेज रही थी। गफूर रेत के कणों के कारण आंखें मींचता व्यंग्यपूर्वक बोला

"सुना है आप लोग कुछ दिनों में रेगिस्तान में बसने जा रहे हैं?"

मुरातअली उदास हो उठा।

"यह बात क्या तुम्हारे कानों तक पहुँच गयी है? यह सही है कि पहाड़ी गांवों के सामूहिक किसानों को नयी जमीनों के कुछ नजदीक बसने का सुझाव दिया जा रहा है। हम इस साल अछूती जमीन को खेती योग्य बनाना चाहते हैं," उसने कहा और मेहरी की ओर इंगित कर कटु स्वर में बोला, "मेरी बेटी तो प्रवासियों में अपना नाम भी लिखा चुकी है। अपने बाप के बारे में तो बिलकुल भूल बैठी है।"

यह सुन रही मेग्ररी उनके पास आकर कुछ नाराजगी और झिडकी के साथ बोली

"अब्बा! मैने आपसे सलाह तो की थी "

"सलाह की थी! पहले नाम लिखा आयी और फिर सलाह करने की सूझी। शर्म की बात है, बेटी! हाथ से ही निकल गयी है तू "

मेग्ररी का चेहरा लाल-लाल हो गया. उसने सिर झुकाकर हठपूर्वक आपत्ति की

"हमारे सारे कोम्सोमोल प्रार्थनापत्र दे चुके हैं।"

"हा, हा!" मुरातअली भडक उठा। "जिधर सब जा रहे है, उधर ही तुम भी। बाप की नही सुनती! बुजुर्गों पर यकीन नही करती! अरी बेटी, अगर सब कुएँ मे कूदने लग जाये, तो क्या तुम भी कूद पडोगी?"

"मै आपके बारे मे भी सोच रही थी, अब्बा," मेग्ररी हार मानने को तैयार नही हुई। "क्योकि नयी जमीने काफी दूर है "

"तो क्या हुआ! मेरे पैर मजबूत हैं, मुझे कोई तकलीफ नही है।"

"लेकिन आयकीज तो "

"बस करो, बेटी। आयकीज ने अछूती जमीन के बारे मे सोचा, उसके लिए उसका शुक्रिया। उसने अच्छा काम छेडा है। हमे जमीन की जरूरत है और हमारे पास उसी की तगी है। लेकिन मै अपना गॉव नही छोडूँगा! यहाँ मेरे बाप की कब्र है! यहाँ उनका अपना पसीना बहाकर बनाया घर है! यह मेरे पुरखो की जमीन है, और मै यहाँ से कही नही जाऊँगा। सुन लिया? नही जाऊँगा। और तुम भी नही जाओगी! चाहे जितनी दरख्वास्ते लिख डालो–हर हालत मे हम कतारताल मे ही रहेगे। चाहे आयकीज, आलिमजान और करीम अपने सारे दूर के, नजदीक के रिश्तेदारो समेत वहाँ जा बसे।"

वे राजमार्ग के पास पहुँचे, जहाँ से अब हाल ही मे जोते हुए कपास के खेत और गाव भूरे-से रग मे झिलमिलाते, वसन्तकालीन भीनी मखमली हरियाली का परिधान ओढे दिखाई देने लगे थे। मुरातअली मौन हो गया। ये खेत उसके पसीने से सीचे गये थे इस बस्ती

मे वे लोग रहते थे, जिनके साथ उसने कपास की खेती की थी, पानी हासिल किया था, अपनी, मेखरी, मातृभूमि की किस्मत जगाई थी, खुशहाली बढाई थी। वह इस जमीन को प्यार करता था और मौन रखकर उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त कर रहा था...

पथिकों को रुकना पड गया गफूर के एक रबड के जूते की रस्सी खुल गयी थी। वह कराहता हुआ उसे ठीक करने लगा और फिर तनकर मेखरी की ओर मुडा, चुपके से उपदेशात्मक स्वर मे कहने लगा

"तुम बाप की मरजी के खिलाफ मत जाओ, लडकी। बडो की अवज्ञा करना गुनाह होता है। तुम, नौजवान लोग, हर वक्त जल्दबाजी करते हो, जिधर जी मे आता है, सिर पर पैर रखकर भागने लगते हो। तुम जल्दबाजी मत करो, अच्छी तरह सोच-समझ लो, अब्बा की अक्लमदी की बाते सुनो। तुम उसे कहाँ घसीट ले जा रही हो? उजाड़ स्तेपी में? पर वहाँ तो सिर्फ उकाब ही आजादी से मडरा सकते है," गफूर गुस्से से हाफने लगा और भौंहें सिकोडकर आगे बोला; "तुम्हारी आयकीज तो बस उच्च अधिकारियो की नजरो मे चढ़ना चाहती है। लेकिन किसान – वे बेवकूफ नही हैं, उन्हे जबरदस्ती रेगिस्तान मे नही घसीटा जा सकता है। मैं जो कह रहा हूँ – देख लोगी।"

"आपको यह तो मालूम ही नही कि कितनी दरख्वास्ते दी जा चुकी है।"

गफूर ने हाथ हिला दिया।

"दरख्वास्त क्या होनी है? कोरा कागज! लोग अपना इरादा बदल देंगे। कौन घर-बार छोडकर जाना चाहेगा? और मेरी भी यही सलाह है, लडकी अपनी दरख्वास्त वापस ले लो। बाप का दिल मत तोडो।"

"पर मै कैसे " मेखरी घबराहट से हाफती हुई बोली, किन्तु पिता ने गुस्से मे उसे टोक दिया

"चुप रह, बेशर्म!"

मेखरी का चेहरा पक्क हो गया, उसने अपने होठ कसकर भीच लिये और कपास के खेतों तक मुह से एक भी शब्द नही निकाला।

दो

निर्मल चश्मा

तेज गरमी पड़ रही थी मध्यान्ह का सूरज मानो भूल गया था कि अभी गरमी नही, वसन्त है, पूरे ज़ोर से तप रहा था। आयकीज़ अपने घोड़े बायचीवार पर कई किलोमीटर का सफर तय कर जिले से लौट आयी थी। उसका चेहरा जल रहा था। घोड़े से उतरकर आयकीज़ ने उसे बाध दिया और स्वय गरमी मे लम्बे सफर के बाद हाथ-मुह धोने अहाते मे नाली के पास चली गयी। अहाते मे कुछ ठण्डक थी मन्द पर्वतीय पवन के झोके पोपलर और बेद की ताज़ा पत्तियों को हिला रहे थे, सारे अहाते मे तेज मादक सुगध फैलाते फूलो को लहका रहे थे। नाली के पास, फूलो के बीच, शहतूत की छाया मे एक चौड़ी लकड़ी की खाट बिछी थी। शीतल पानी से हाथ-मुह धोकर आयकीज़ खाट पर बैठ गयी और सोच मे डूब गयी गरमी के कारण थकने और शिथिल हो जाने पर इस प्रकार निश्चल बैठकर शान्ति और ठण्डक का आनन्द लेना, पानी पर डोगियो की तरह तिरती सेब की नन्ही-नन्ही श्वेत पखड़ियो की ओर देखना, आराम से सोचना, यादो की दुनिया मे खो जाना कितना अच्छा लगता है!

वह नाली को ताकती हुई अपने पति आलिमजान के बारे मे सोच रही थी, पर्वतीय समीर और कल-कल करती नाली की जल-धारा मानो उसके नाली के जल सदृश निर्मल और स्वच्छ विचारो को दोहरा रहे थे, जिसके तल मे नाना रग के ककर साफ दिखाई दे रहे थे।

आलिमजान इस समय बहुत दूर था। उसने दो वर्ष पूर्व सस्थान के पत्राचार विभाग मे प्रवेश लिया था और हाल ही मे उसकी आगामी परीक्षाएँ देने गया था। वह आयकीज़ को अकसर लिखा करता था, उसके पत्रों की प्रत्येक पक्ति उसके प्रति चिन्ता और प्रेम से ओत-प्रोत होती थी; किन्तु पत्र स्वय आलिमजान की कमी पूरी नही कर सकते थे। आयकीज़ को अपने पति के साथ शाम को यहां, घर मे होनेवाली लम्बी सायकालीन बातचीत, ग्राम सोवियत, कार्यालय और

उमूरज़ाक़-अता , जिन्हें जीवन का भारी अनुभव था , और जानकार रूसी सिंचाई-विशेषज्ञ का समर्थन मिलने से आयदोग़ का इरादा पक्का हो गया। उसने जुरावायेव की सलाह ली और उन्होंने स्मिर्नोव व पोलोदिन को , जिसे कुछ समय पूर्व ही मशीन-ट्रैक्टर-स्टेशन निदेशक नियुक्त किया गया था , जिला समिति के ब्यूरो के सामने अछूती धरती को कृषि योग्य बनाने और पहाड़ी गांवों के सामूहिक किसानों के नयी जमीनों पर पुनर्वासन की ठोस योजना तैयार करके पेश करने की जिम्मेदारी सौंप उनके साथ कर दिया। जुरावायेव के अनुरोध पर डिज़ाइन-इंजीनियरों के एक दल को इन उत्साही लोगों की सहायता के लिए भेज दिया गया।

योजना तैयार हो जाने पर आयदोग़ , पोलोदिन और स्मिर्नोव ने रिपोर्ट तैयार की। उस पर पहले सामूहिक फार्म के पार्टी-संगठन में विचार किया गया , तत्पश्चात्—सामूहिक फार्म के कार्यालय में।

ब्यूरो व कार्यालय ने योजना को स्वीकृति प्रदान कर दी। केवल कादीरोव उदास मौन और मन में वैर-भाव छिपाये हुए बैठा , भौंहें चढ़ाये , बड़े उत्साह से स्तेपी को कृषि योग्य बनाने में होनेवाले लाभों के बारे में बता रही आयदोग़ की ओर देख रहा था। कादीरोव ने न उसके समर्थन में कुछ कहा , न ही विरोध में , बैठे-बैठे केवल यही व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी की

"चुहिया बिल में वैसे ही बड़ी मुश्किल से घुस पाती है , तिस पर उसने अपनी दुम से छलनी और बांध दी !"

आयदोग़ को इन शब्दों पर आश्चर्य हुआ। "नयी जमीनों को कृषि योग्य बनाने से सामूहिक फार्म को कितना फायदा होगा , इसे कादीरोव को नहीं तो और किसको समझना चाहिए ," उसने सोचा। "क्या वह सचमुच अभी भी नहीं समझता कि लोगों का इससे कितना भला होगा ? "

जब सामूहिक फार्म अक्तीनसाय भूखण्ड को कृषि योग्य बना रहा था कादीरोव ने व्यंग्य करने , निराशावादी भविष्यवाणियां करने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी और सामूहिक फार्म के किसानों के पानी खोज निकालने तथा गरमी से तड़की जमीन पर कपास पैदा करने में सन्देह भी अधिक नहीं छिपाया था। लेकिन उसकी भविष्यवाणियां सच नहीं निकलीं अक्तीनसायवासियों के मैत्रीपूर्ण समूह ने अपना

निशाना कार्रवाई-पर कर दिखाया, जब कि कादीरोव की, जिसकी प्र
तिष्ठा सामूहिक किसानों की नजरों में काफी कम हो चुकी थी, जिसकि
सुनती नहीं। और यदि बड़े रोग में कादीरोव के पक्ष में बोलनेवा
ले कार्यकारिणी के नये अध्यक्ष मुरतालिएव ने हस्तक्षेप न कि
या होता तो उसे अध्यक्ष पद से हाथ धोना पड़ सकता था। लेकिन उस
दिन सब ठीक-ठाक हो गया और उसने शान्ति और आत्मविश्वा
स प्राप्त कर लिया। सामूहिक फार्म शक्ति जुटाता बढ़ता जा रहा
था क्योंकि यह कादीरोव सामूहिक फार्म का अध्यक्ष था। औ
जब कभी सामूहिक फार्म की उपलब्धियों की बात छिड़ती, आत्मसंतो
के साथ वह कह उठता 'हमने नहर खोदी! हमने पानी दिया!'

कादीरोव मजबूत सामूहिक फार्म के सम्मानित अध्यक्ष पद का आ
हो चुका था। वह दूसरों की बोई फसल काट रहा था, पर उस
अन्तःकरण शान्त था वह सोचता था – आखिर मैं खुद को सामूहि
फार्म से अलग तो नहीं कर सकता। अन्ततः कादीरोव ने स्वयं
यह विश्वास दिला दिया कि वह सब, जो सामूहिक फार्म के किसा
ने किया है, उन्होंने उसके सीधे और सक्रिय सहयोग से किया है, औ
पूर्णतया आश्वस्त हो गया। अब वह पहले से भी अधिक निश्चिन्त हो
कुरसी पर जमकर बैठा था, और उसकी बात भी पहले से ज्यादा मा
जाती थी दूसरों द्वारा की हुई मेहनत के यश का लाभ उठाकर
मध्यम श्रेणी के सामूहिक फार्म के अध्यक्ष से विशाल सफलता
फार्म का सचालक बन बैठा था। उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाने से उस
चेहरे-मोहरे में भी परिवर्तन आये काली ऊनी फौजी कमीज
बाधी जानेवाली पेटी में न जाने कितने नये छेद और करने पड़ गये
चेहरा गोल हो गया, ठोढ़ियाँ तीन हो गयी, आखे सकरी दरारों
बदल गयी, और उन पर लाल-लाल फूले गालों की गद्दियाँ पहले
ऊपर चढ़ने लगी। कादीरोव का लोगों से बातचीत करने, सभाओं
भाषण देने का तरीका भी बदल गया वह शब्दों का उच्चारण इत
धीरे-धीरे अहकारपूर्ण आडम्बर के साथ करता था, मानो उन्हें उप
दे रहा हो। वैसे वह यह मानते हुए कि उसकी कृपण टिप्पणियाँ अ
लम्बे-लम्बे भाषणों से अधिक वजनी होती हैं, उधार भी ज्यादा न
दिया करता था।

कहने का मतलब है, कादीरोव पूरी तरह सफलता प्राप्त कर रहा था।

और लोग उसके बारे मे तरह-तरह की बाते करते थे, क्योकि लोगो की राय स्तेपी की तरह भिन्न-भिन्न होती है उसमे कटीली झाडी भी मिल जाती है, कडवा नागदौना भी, नयनाभिराम फूल भी दिखाई देते है, हवा के झोके से नम्रतापूर्वक ज़मीन से लग जानेवाली नरम घास भी. अलतीनसाय मे भी यही बात थी। बहुत से कहते थे कि अध्यक्ष को घमण्ड हो गया है, अपनी गलतियो के बारे मे भूल गया, कादीरोव इस पर एतराज करता "हाँ, मैने गलतियाँ की, यह सच है! लेकिन मैने अपनी गलतिया मान ली। न जाने किस जमाने की बाते हैं, किसी को याद नही है।

अध्यक्ष के अनुभव और नि स्वार्थता की प्रशसा करनेवाले चापलूसो की भी कमी नही थी। नि सन्देह कादीरोव उनसे वहम नही करता था, केवल कृपापूर्वक मुस्कराता था।

आयकीज़ को कादीरोव का आत्मसन्तोष पसन्द नही था। लेकिन साथ ही उसे खुशी भी होती थी क्योकि कादीरोव का सामूहिक फार्म की सफलताओ की डीग हाकने का अर्थ था कि वह आयकीज़ की सत्यता स्वीकार करता है। जो सपने उसके ख्याल मे असाध्य माने जाते थे उन्हे सच होता वह अपनी आखो से देख चुका था, अपनी हाल की पराजय पर सन्तोष कर बैठा था—और क्या यह सराहने लायक बात नही है? चाहे वह मोर की तरह पूँछ फैलाकर नाचता रहे, चाहे दूसरो को मिले यश के सुर्खाब के पर अपने को लगाकर सजता रहे। उसे यानी आयकीज़ को यश नही चाहिए। उसके लिए तो इतना ही काफी है कि उसका सपना सच हो गया और अब कादीरोव सरीखे लोग भी जनता की शक्ति मे विश्वास करने लगे।

उसे इस बात मे सन्देह नही था कि कादीरोव जैसी आत्माभिमानी अध्यक्ष नयी सफलताओ की आशा दिलानेवाली स्तेपी को कृषि योग्य बनाने की योजना को सहर्ष स्वीकार कर लेगा।

और इसमे आश्चर्य की कोई बात नही थी कि कादीरोव द्वारा सामूहिक फार्म के कार्यालय मे की गयी टिप्पणी से आयकीज़ परेशान हो उठी थी। यह सच है कि कादीरोव खुले आम कुछ नही कहता था,